

# परमार्थसार

आचार्य अभिनवगुप्तपादप्रणीत एवम्  
शैवाचार्य श्रीयोगराजकृत संस्कृत वृत्ति

सम्पादन एवं हिन्दी रूपान्तरण  
प्रो० नीलकण्ठ गुर्तू

पेनमैन पब्लिशर्स

दिल्ली ( भारतवर्ष )

## विषयानुक्रम

विषय	कारिकांक	पृष्ठ
पूर्वावलोकन		(V)
ग्रन्थकार का मंगलाचरण	२	२-८
शास्त्र का अवतार, उपोद्घातीय	२-३	८-१२
अंडचौके के आकारवाला विश्व परमेश्वर की स्वातन्त्र्यशक्ति का ही बहिरंग विकास	४	१२-१७
अंडचतुष्टय में भोक्त और भोग्य का स्वरूप	५	१७-२३
विश्व की प्रतिबिम्बरूपता	६-९	२३-४१
विश्व के आधार परतत्त्व का स्वरूप	१०-११	४१-४७
अभेदवाद की स्थापना	१२-१३	४८-५४
शुद्धाध्व के पाँच तत्त्वों का विकास	१४	५४-६०
मायातत्त्व का स्वरूप	१५	६१-६३
पुरुषतत्त्व का स्वरूप	१६	६३-६६
कंचुकषट्क का विकास और अंतरंगता	१७	६६-७०
कंचुकषट्क की शुद्धि का उपाय	१८	७०-७२
प्रकृति और तीन अंतःकरण	१९	७३-७४
पाँच ज्ञानेन्द्रिय और पाँच कर्मेन्द्रियों का विकास	२०	७४-७५
पाँच तन्मात्र	२१	७५-७६
पाँच महाभूत	२२	७६-७८
प्राधानिक कंचुक का आवरण	२३	७८-८०
आवरण के तीन रूप	२४	८०-८१
आवरण के प्रभाव से भेदबुद्धि का विकास	२५	८२-८३

विषय	कारिकांक	पृष्ठ
जाग्रत् आदि अवस्था भेदों में एक ही		
चैतन्यमहेश्वर की व्यापकता	२६	८४-८५
छः परस्परभिन्न अवस्थाओं की अयथार्थता	२७	८६-९१
भ्रान्ति में असत् अर्थ के प्रतिभास की अपार क्षमता	२८	९२-९३
माया से जनित मोहात्मकता की सर्वाङ्गीण व्यापकता	२९	९४-९५
भ्रान्ति का उद्भव	३०	९६-९८
अनात्मा शरीर, प्राण इत्यादि पर आत्म-अभिमान उत्पन्न होने का मूलकारण भ्रान्ति ही है	३१	९८-१००
शिव का स्वयं ही स्वरूप को भ्रान्ति में जकड़ने का प्रकार	३२	१००-१०४
शिव का स्वातन्त्र्य ही भ्रान्ति के बंधन में डालने और उससे मुक्त करने की क्रीड़ा का मूलकारण है	३३	१०४-१०९
तुरीयाभाव का स्वरूपनिर्धारण	३४	१०८-११०
जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति के विषय में वेदान्त का दृष्टिकोण और उनमें तुरीया की अनुस्यूतता	३५	१११-११८
सारे प्राणिवर्ग में अनुस्यूत होने पर भी परम-पुरुष की मलहीनता	३६	११८-१२०
विशुद्ध चिन्मात्र होने पर भी जीवों में सुख, दुःख आदि अवस्थाओं का भेद क्यों?	३७	१२१-१२४
परतत्त्व में सुखिता, दुःखिता इत्यादि का अभाव	३८	१२४-१२५
स्वात्ममहेश्वर स्वयं ही ज्ञप्ति के द्वारा भ्रान्ति का निवारण करने में स्वतन्त्र है	३९	१२५-१२७
उत्कृष्ट योगी की कृतकृत्यता	४०	१२८-१२९
अमृतबीज का उद्धार और पूर्ण तन्मयीभाव की अवस्था	४१-४५	१३०-१४२
फिर पांच ईश्वरीय शक्तियों के बहिर्मुखीन प्रसारक्रम के अनुसार बाहरी विश्व की सृष्टि	४६	१४२-१४४
बहिरंगरूप में विश्व के उल्लासन और अंतरंग रूप में विलयन की विमर्शमयी क्रीड़ा ही अहंभावमयी परमेश्वरता का रहस्य	४७-५०	१४४-१५१

विषय	कारिकांक	पृष्ठ
योगी की परब्रह्मस्वरूपता	५१	१५१-१५३
सिद्धयोगी के लिए द्वन्द्वों की भी ब्रह्मरूपता	५२	१५४-१५५
ब्रह्मज्ञानी के परिप्रेक्ष्य में कर्मफलों की निःसारता	५३	१५५-१५६
अख्याति से ही जन्म-मरण	५४	१५६-१५७
ज्ञान प्राप्ति से कर्मफलों का नाश	५५	१५८-१५९
ज्ञानी के लिए संसारभाव की प्रभावहीनता	५६-५९	१५९-१६८
मुक्ति का स्वरूप	६०	१६८-१७२
जीवन्मुक्ति	६१	१७२-१७४
जीवन्मुक्ति के संदर्भ में कर्मों की फलवत्ता का अभाव	६२	१७४-१७५
बार बार जन्म-मरण का कारण	६३	१७५-१७८
आत्म-परिचय का फल	६४-६८	१७८-१८९
जीवन्मुक्त का अवशिष्ट जीवन-व्यवहार	६९-८१	१८९-२२५
ज्ञानप्राप्ति के विषय में अधिकारिता का अभाव	८२	२२५-२२७
ज्ञानी के लिए मृत्युस्थान का निर्णय	८३-८४	२२७-२३७
मुक्त आत्म का स्वरूप	८५-८६	२३७-२४०
योगिसंवेदन का रूप	८७-८८	२४०-२४४
निजी मानसिक संस्कारों से ही स्वर्ग, नरक इत्यादि की प्राप्ति	८९	२४४-२४६
निजी वासनाओं के अनुसार मरणोपरान्त गति	९०-९३	२४६-२५४
ज्ञानी और अज्ञानी दोनों का मृत्युक्षण समान	९४-९५	२५४-२५९
तीव्र शक्तिपात	९६	२६०-२६२
मंद शक्तिपात	९७	२६२-२६४
योगभ्रष्ट का स्वरूप और आगामी दशा	९८-१०२	२६४-२७१
ग्रंथ का उपसंहार	१०३	२७१-२७३
श्लोकानुक्रमणी		२७४-२७५